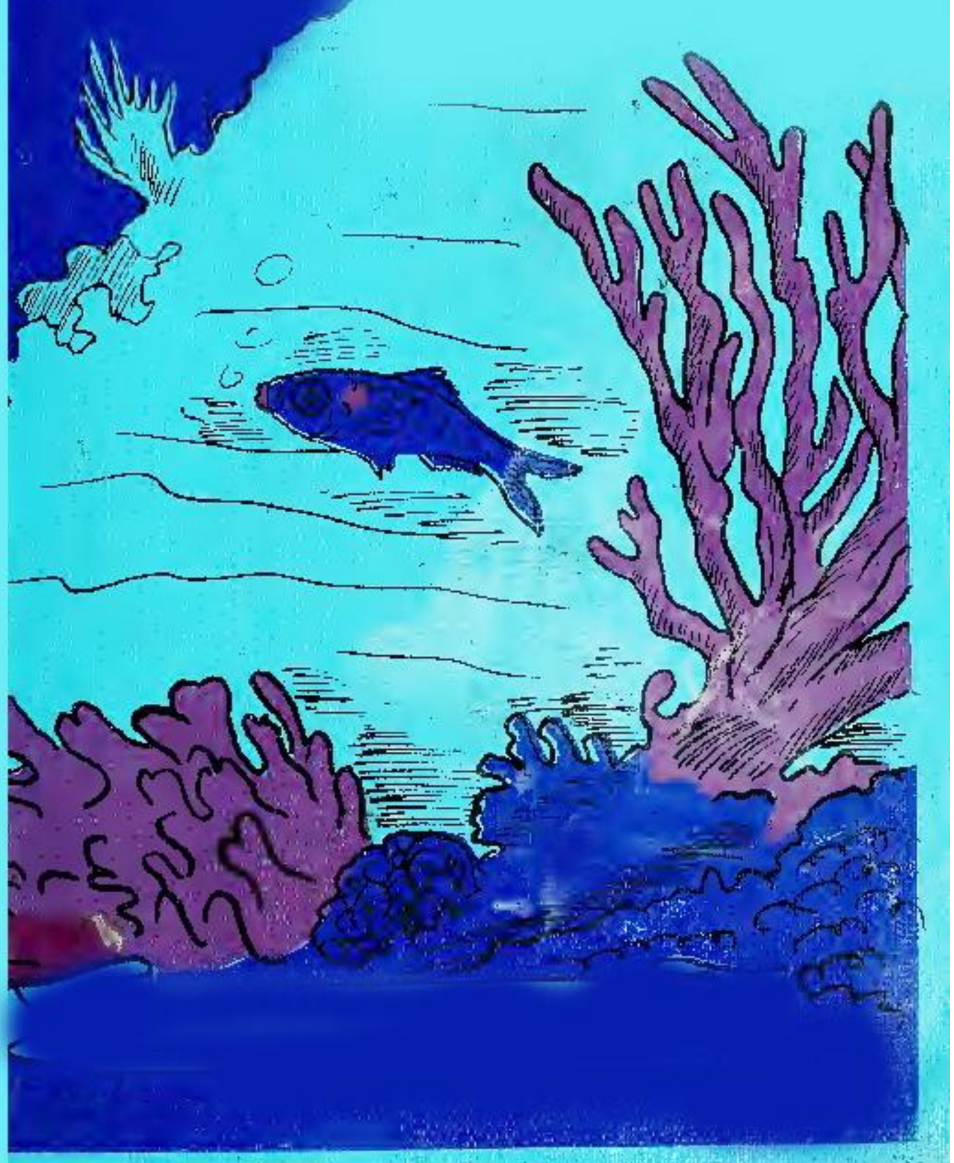
अपने स्कूल से छूटी मछली

एवलिन शॉ

चित्र: राल्फ कार्पेंटियर





अपने स्कूल से छूटी मछली

एवलिन शॉ

चित्र: राल्फ कार्पेंटियर











सूर्य अस्त हो चुका था,

रात हो चुकी थी,

समुद्र में, हेरिंग मछलियाँ

बहुत धीरे-धीरे तैर रही थीं,

वे एक समूह में तैर रही थीं,

जिसे स्कूल कहा जाता है.



जल्द ही मछलियों ने तैरना बंद कर दिया

क्योंकि बहुत अंधेरा हो गया था,

वे समुद्र के रेतीले तल पर

एक साथ आराम करने लगीं,

फिर वे सो गईं,

मछलियाँ इंसानों की तरह नहीं सोतीं.

उनकी पलकें नहीं होतीं हैं,

इसलिए वे अपनी आँखें

बंद नहीं कर सकतीं हैं.

जब वे सोती हैं,

तो ऐसा लगता है कि

वे एक-दूसरे को देख रही हों,

हेरिंग मछलियाँ पूरी रात सोती रहीं.



सूर्य उदय हुआ,

और समुद्र में रोशनी छाई,

एक-एक करके

मछलियाँ जाग उठीं,

वे इधर-उधर घूमने लगीं,

हेरिंग मछलियों का समूह जल्द ही

एक स्कूल में बदल गया,

और वे रेतीले तल से दूर तैर गईं,

लेकिन हेरिंग मछलियों में से एक

अभी भी सो रही थी,

जब वह जागी,

तो मछलियों का झुंड गायब था.



उसने अपनी दाईं ओर देखा,

उसने अपनी बाईं ओर देखा,

वह बिल्कुल अकेली थी.



अपनी सारी ज़िंदगी,

वह दूसरी हेरिंग मछलियों

के साथ रही थी.

अंडे सेने के बाद

उन्होंने एक दूसरे को पाया था,

वे आधे इंच से भी कम लंबी थी.

अब छोटी मछली

एक साल की हो गई थी,

वह चार इंच लंबी थी.

झुंड में सभी मछलियाँ

उसकी तरह ही दिखती थीं,

वे एक ही तरह की

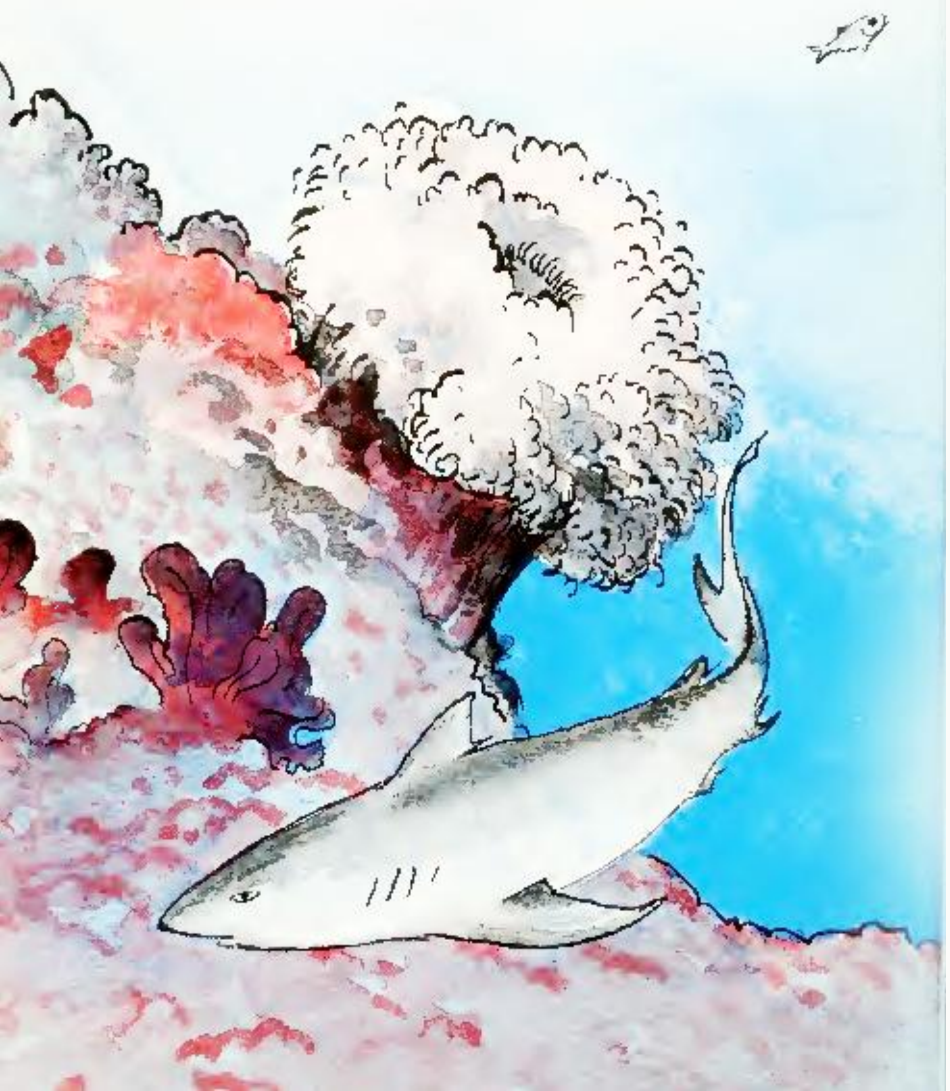
और एक ही प्रजाति की थीं,

वे लगभग एक ही उम्र

और आकार की भी थीं.

छोटी हेरिंग अपने झुंड के बिना

सुरक्षित नहीं थी.



उसने झुंड को ढूँढना शुरू किया,

वह तेजी से ऊपर-नीचे

और एक तरफ से

दूसरी तरफ तैरने लगी.

उसे झुंड कहीं नहीं मिला,

और वह भूखी भी थी.

स्कूल अक्सर भोजन की तलाश में

कोरल रीफ पर जाता था.

छोटी मछली कोरल रीफ की ओर तैरी

उसकी पूंछ कभी दाएं

और कभी बाएं घूम रही थी.

वह थकी हुई थी और बहुत भूखी थी,

उसने छोटे जानवरों और पौधों को देखा

जिन्हें प्लैंकटन कहा जाता है.

वे पानी में तैर रहे थे,

उसने अपना मुंह खोला

और कुछ प्लैंकटन खाए.

उसने चक्कर लगाया

और फिर कुछ और प्लैंकटन खाए,

जल्द ही उसकी भूख मिट गई.



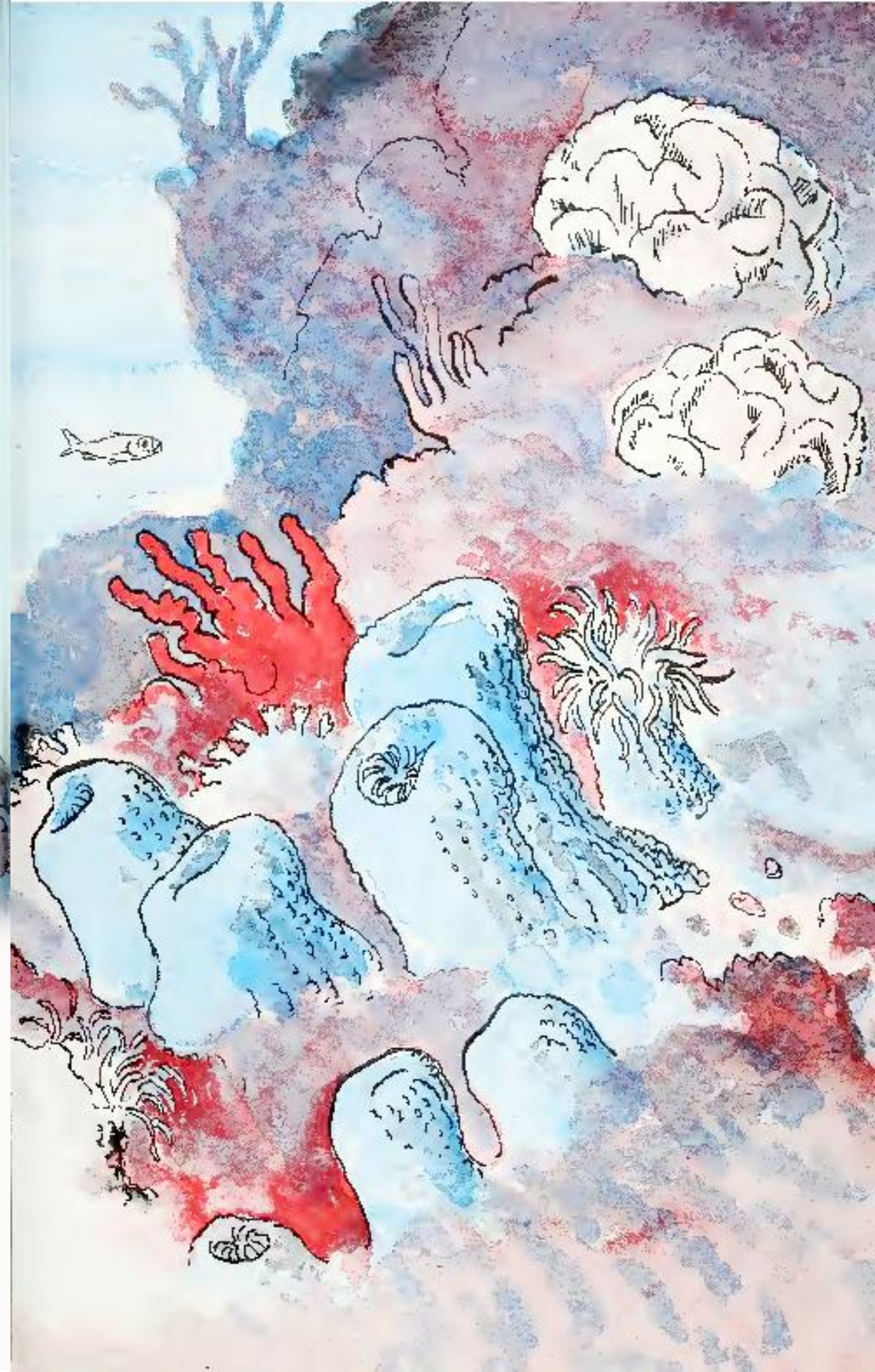


वह कोरल रीफ की ओर

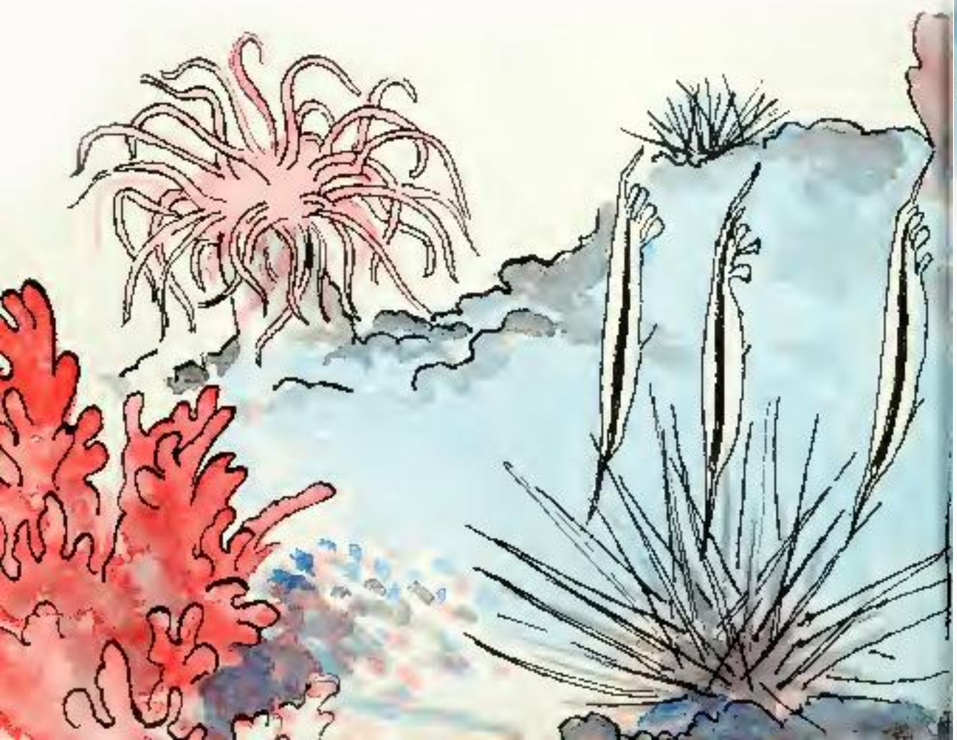
तेजी से तैरती रही,

साफ नीले पानी में

उसने समुद्री पंखे और कोरल देखे.



उसने कुछ जानवरों को देखा
जो धागे की तरह दिखते थे,
वे पानी में आगे-पीछे चल रहे थे,
उसने काले जानवरों को देखा
जिनके लंबी काली रीढ़ की हड्डी थी,
ये समुद्री अर्चिन थे.



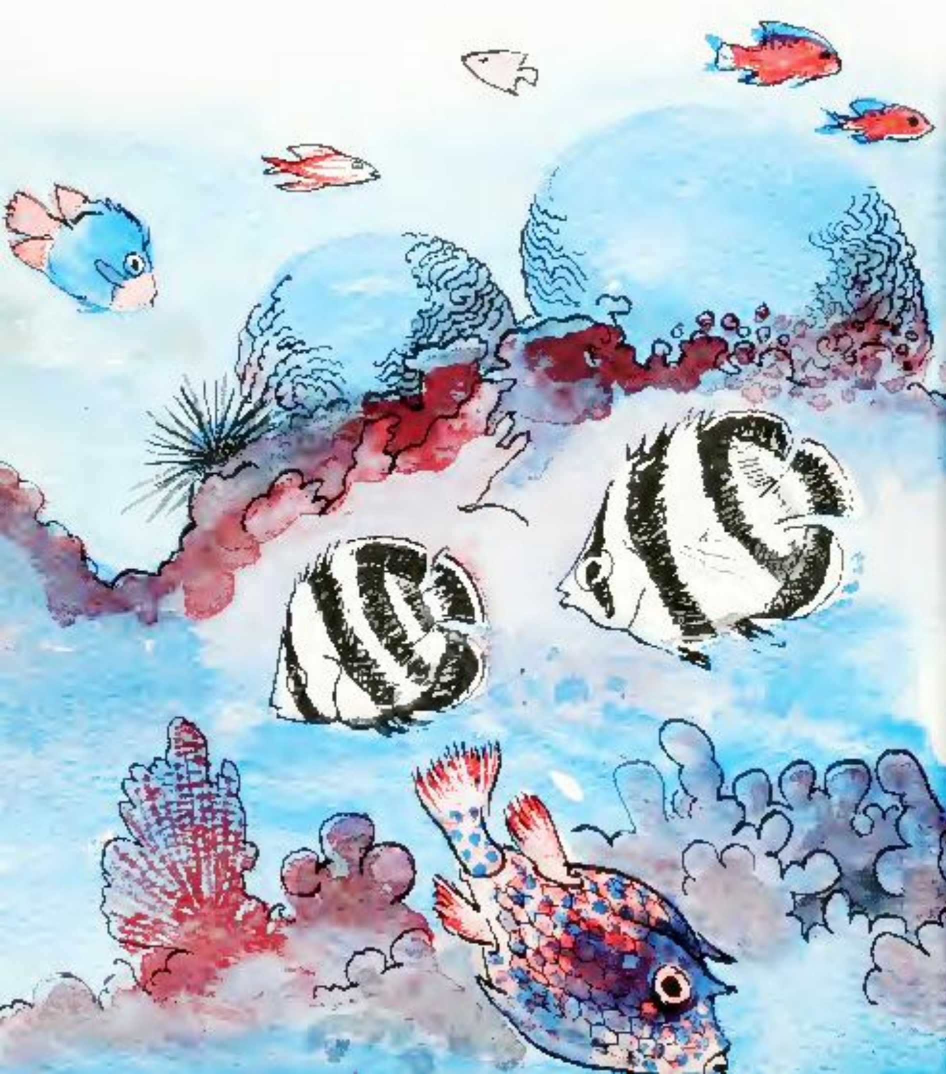


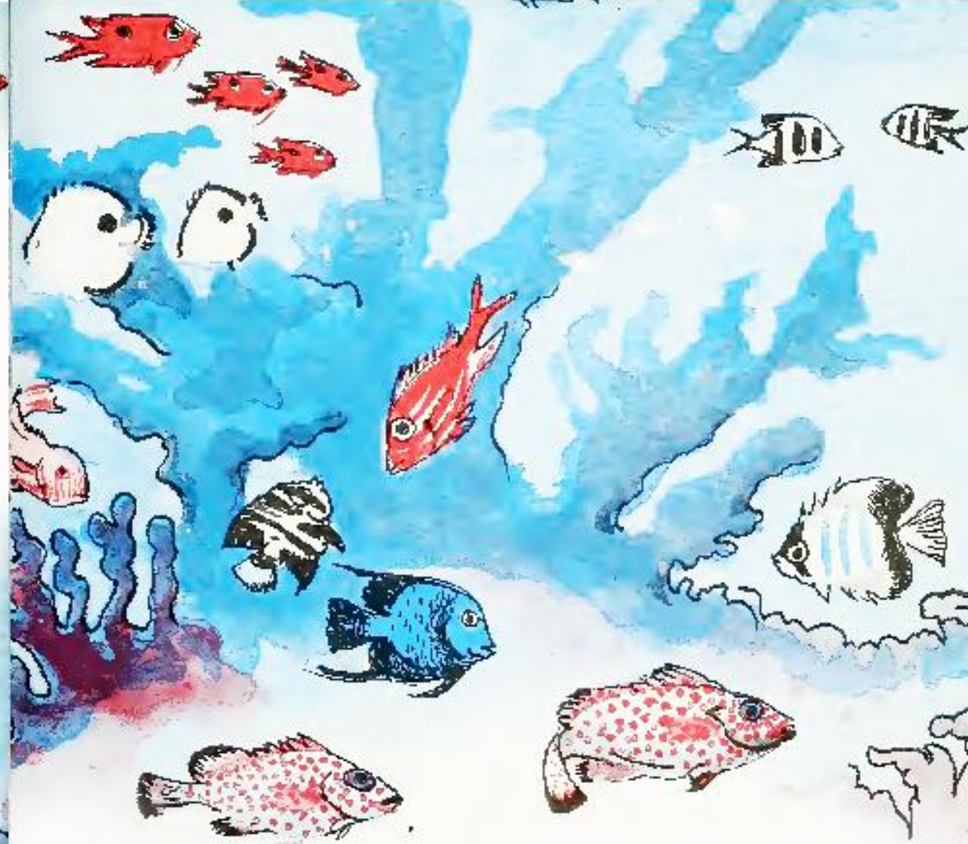
एक मोरे ईल ने अपना सिर
उस छेद से बाहर निकाला
जहाँ वह रहती थी,
उसके दाँत तीखे सफ़ेद थे.

बहुत सी मछलियाँ

चट्टानों के छोटे-छोटे छेदों में से

अंदर-बाहर आ-जा रही थीं.





वे लाल, नीली, पीली, काली थीं,

कोरल रीफ एक फूलों के बगीचे जैसी दिख रही थी.

एक छोटी बैंगनी मछली के सिर पर सींग थे.



ये मछलियाँ उसके स्कूल की नहीं थीं
वे उसके रंग की नहीं थीं,
उनकी गंध उसके स्कूल की
मछलियों जैसी नहीं थी,
वे उसके स्कूल की मछलियों
जैसे नहीं तैर रही थीं.
छोटी मछली तैरती रही,
उसने अपना सिर कोरल रीफ़ में
खुली जगहों में डाला,
वह गहरे रंग की धारियों वाली
एक नीली मछली की ओर तैरी.



उस मछली को सार्जेंट मेजर कहते हैं
वह अंडों की रखवाली कर रही थी.
सार्जेंट मेजर अन्य मछलियों
को अंडे खाने से रोक रहा था.
जब छोटी हेरिंग मछली
तैरकर उसके पास आई,
तो सार्जेंट मेजर गुस्से में
उसकी ओर तैरा.





फिर वो तेजी से तैरकर दूर चली गई,

वह लगभग एक ऑक्टोपस से टकरा गई.

ऑक्टोपस एक चट्टान के नीचे बैठा था,

उसने अपनी आठ भुजाओं में से

तीन भुजाएँ ऊपर उठाईं,

लेकिन ऑक्टोपस बहुत धीमा था,

छोटी मछली भागने में सफल हुई.

एक केकड़ा चट्टान के पास

भोजन की तलाश कर रहा था,

अचानक ऑक्टोपस ने अपनी भुजाएँ फैलाईं,

और उसने वो केकड़ा पकड़ लिया,

जो हेरिंग मछली को खाने जा रहा था.

हेरिंग मछली तैरती रही.



उसने दूर से एक बड़ा काला जानवर देखा,

दूर से, मछलियों का एक झुंड

एक बड़े काले जानवर जैसा दिखता है,

वो बड़ी भूखी मछलियों को

डराकर भगा सकता है.

जब छोटी मछली तैरने लगी,

तो उसने उस झुंड को देखा,

वो झुंड खतरे में था,

एक समुद्री कछुआ झुंड का पीछा कर रहा था,

कछुए ने अपनी गर्दन बाहर निकाली.

उसने मछली पर झपट्टा मारा,

वह उनमें से एक को

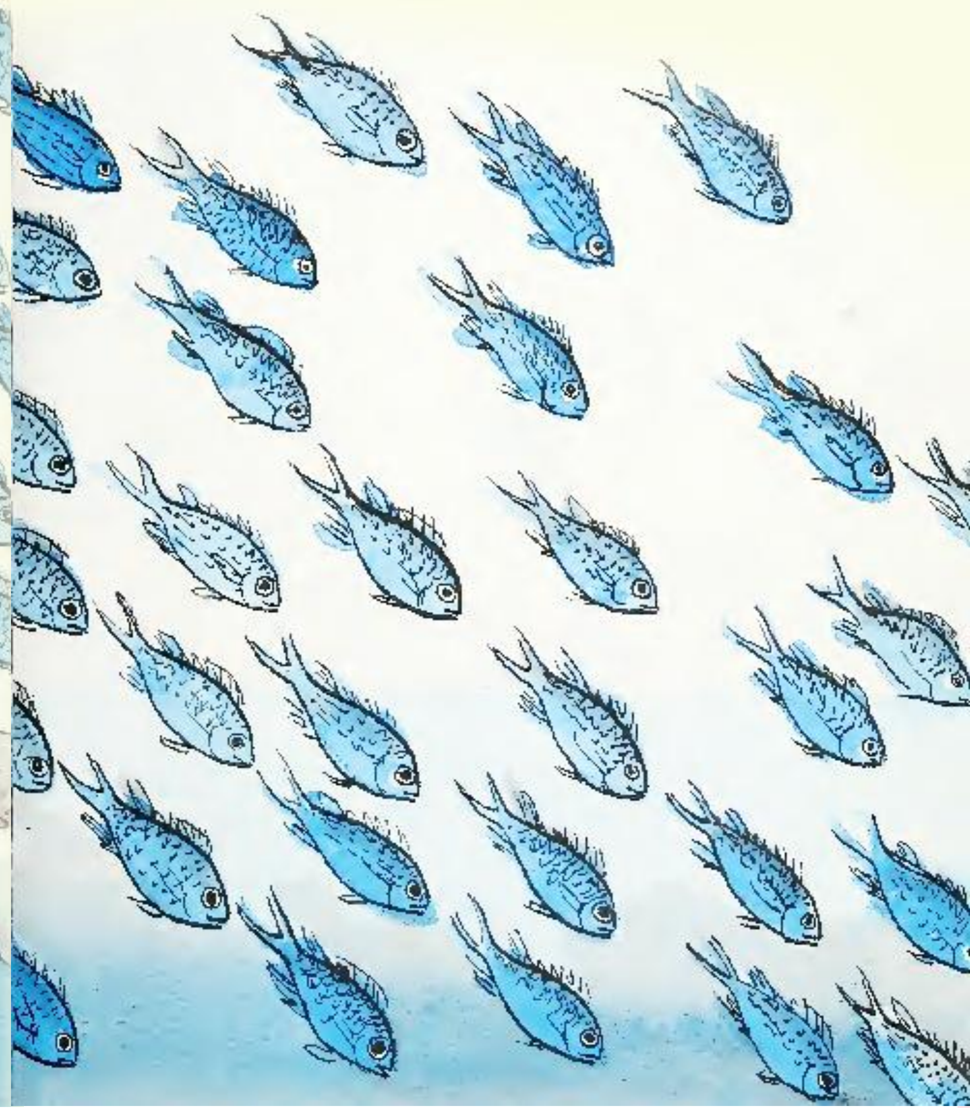
पकड़ने की कोशिश कर रहा था.



लेकिन हर बार जब वह

अपना सिर बाहर निकालता,

तो मछली अपनी दिशा बदल देती.





समूह की मछलियाँ

कई दिशाओं में तैर रही थीं.

कछुआ कोई मछली नहीं पकड़ सका,

मछली पकड़ने के लिए कछुआ नीचे कूदा,

लेकिन इस बीच समूह ऊपर तैर गया,

सारी मछलियाँ भाग गईं.



छोटी हेरिंग मछली ने उन्हें देखा,

उसने देखा कि वे

उन मछलियों से अलग थीं,

जिनके साथ वह रहती थी.

वे नीली थीं,

वे बड़ी थीं.

उसने उनके साथ जुड़ने की

कोशिश नहीं की.

वह तैरती रही,

वह वापस चट्टान पर तैरकर गई,

इस बार वह दूसरी तरफ गई,

वहाँ उगने वाले पौधे

घास जैसे दिख रहे थे.





वहाँ एक और मछलियों का समूह

रेतीले तल पर चर रहा था,

वह उनके पास गई,

अचानक वह रुक गई

स्कूल के दूसरी तरफ कुछ था.



वो एक बाराकुडा था,

बाराकुडा शांत था.

ऐसा लग रहा था जैसे

पानी में कोई लट्ठा तैर रहा हो,

छोटी मछली घास के पीछे चली गई.

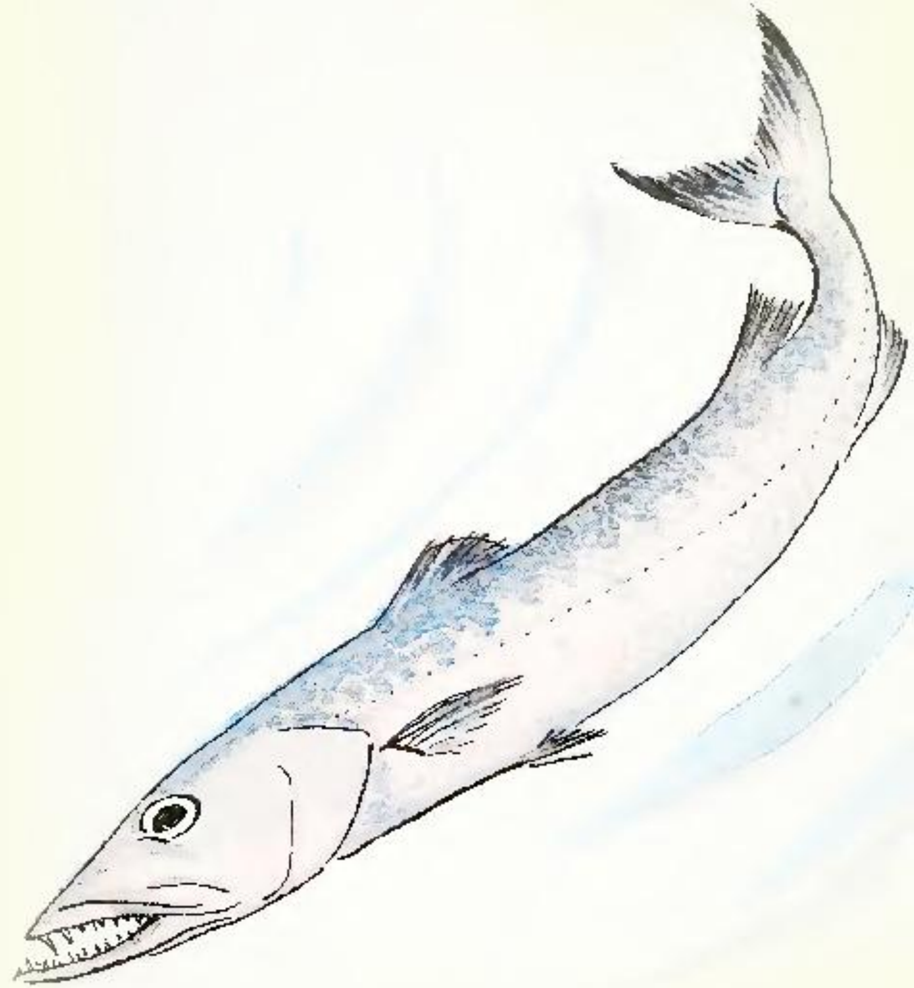




बाराकुडा ने अपना मुंह

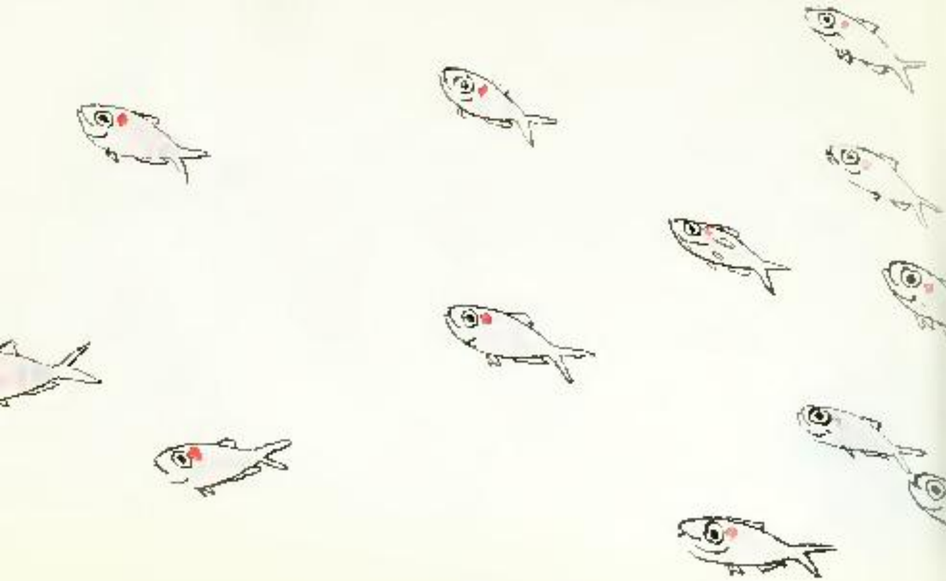
धीरे-धीरे खोला और बंद किया,

उसके जबड़े से दांत बाहर निकले हुए थे.



अचानक बाराकुडा

मछलियों के स्कूल की ओर तैरा.



सभी मछलियाँ डर गईं,

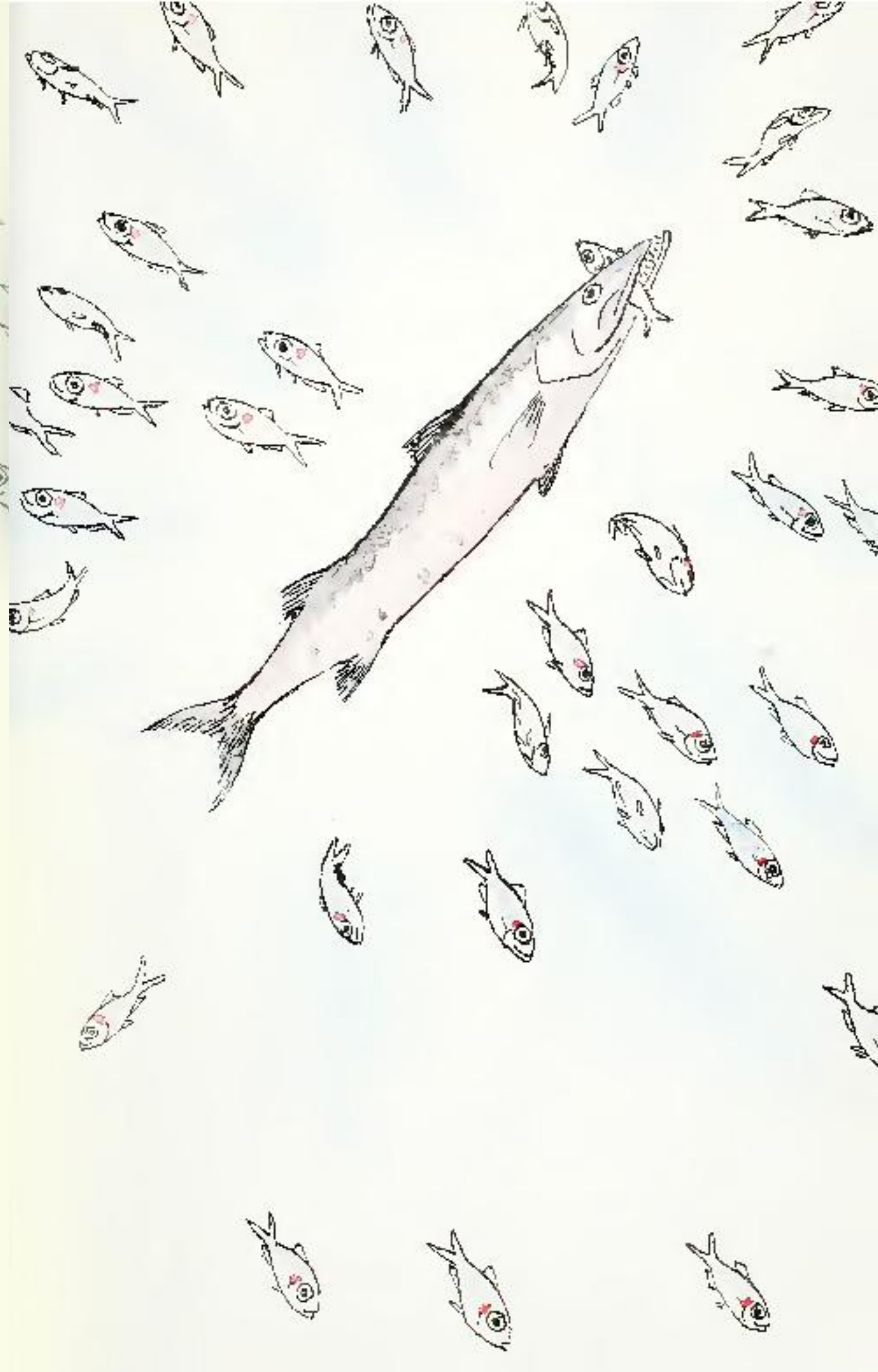
वे कई दिशाओं में तैरने लगीं.

एक मछली बाराकुडा के सामने तैर गई,

बाराकुडा ने अपना मुंह खोला

और अपने जबड़े कसकर बंद कर लिए,

उसने वो मछली खा ली.



मछलियों का स्कूल तैरकर दूर चला गया,

वे घास के पास से तैरकर दूर निकल गए

जहाँ छोटी हेरिंग मछली छिपी हुई थी.

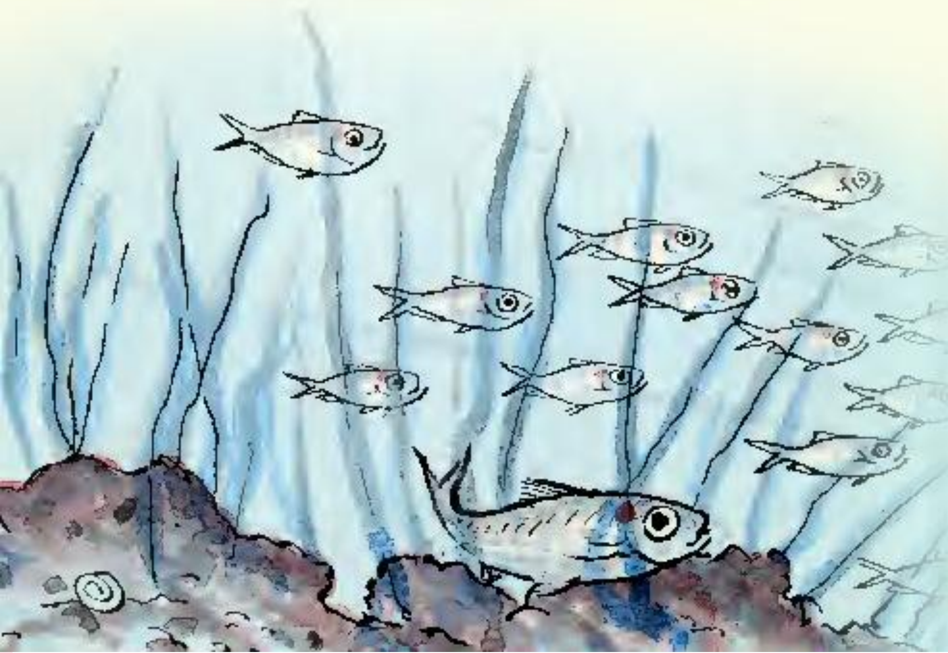
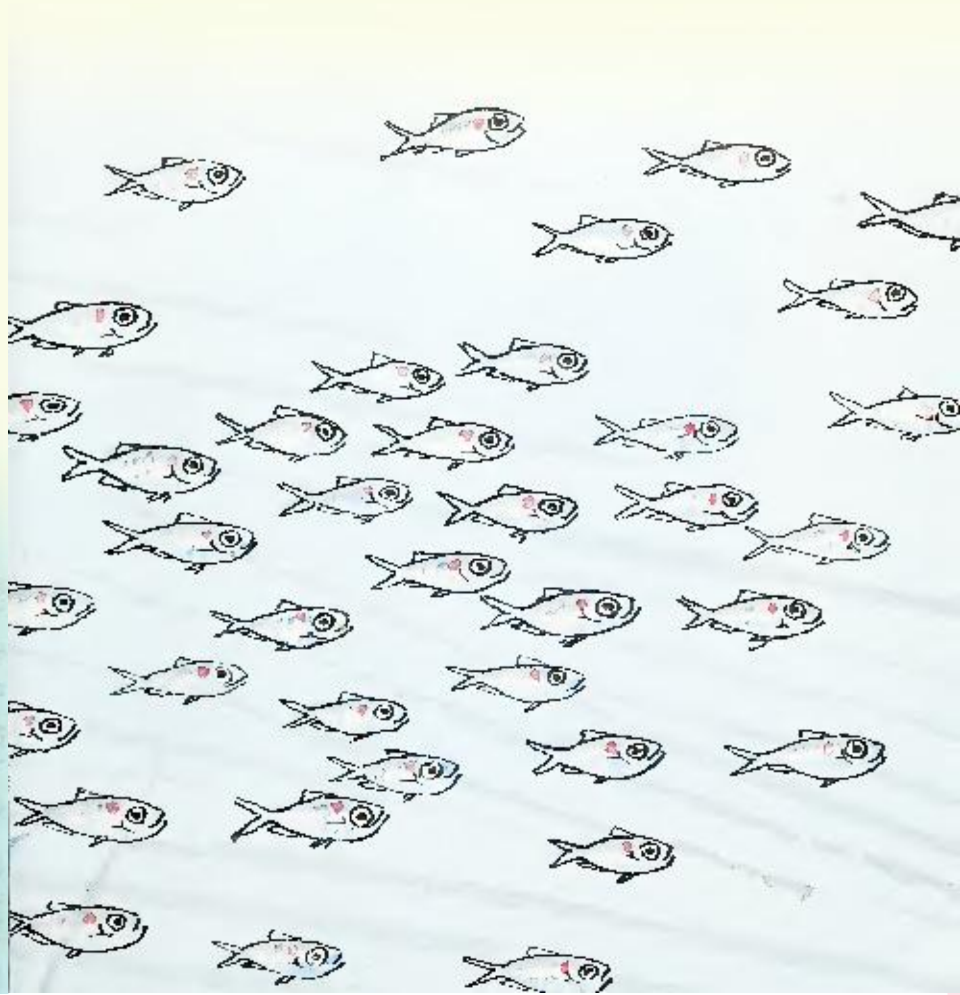
ये मछलियाँ बिल्कुल उसके अपने स्कूल

की मछली जैसी ही लगीं.

वे चांदी के रंग की थीं

और उनके सिर पर लाल बिंदु थे,

और वे उसी आकार की थीं जैसे वो थी.

आखिरकार उसे हेरिंग मछलियों

का एक झुंड मिल गया था.

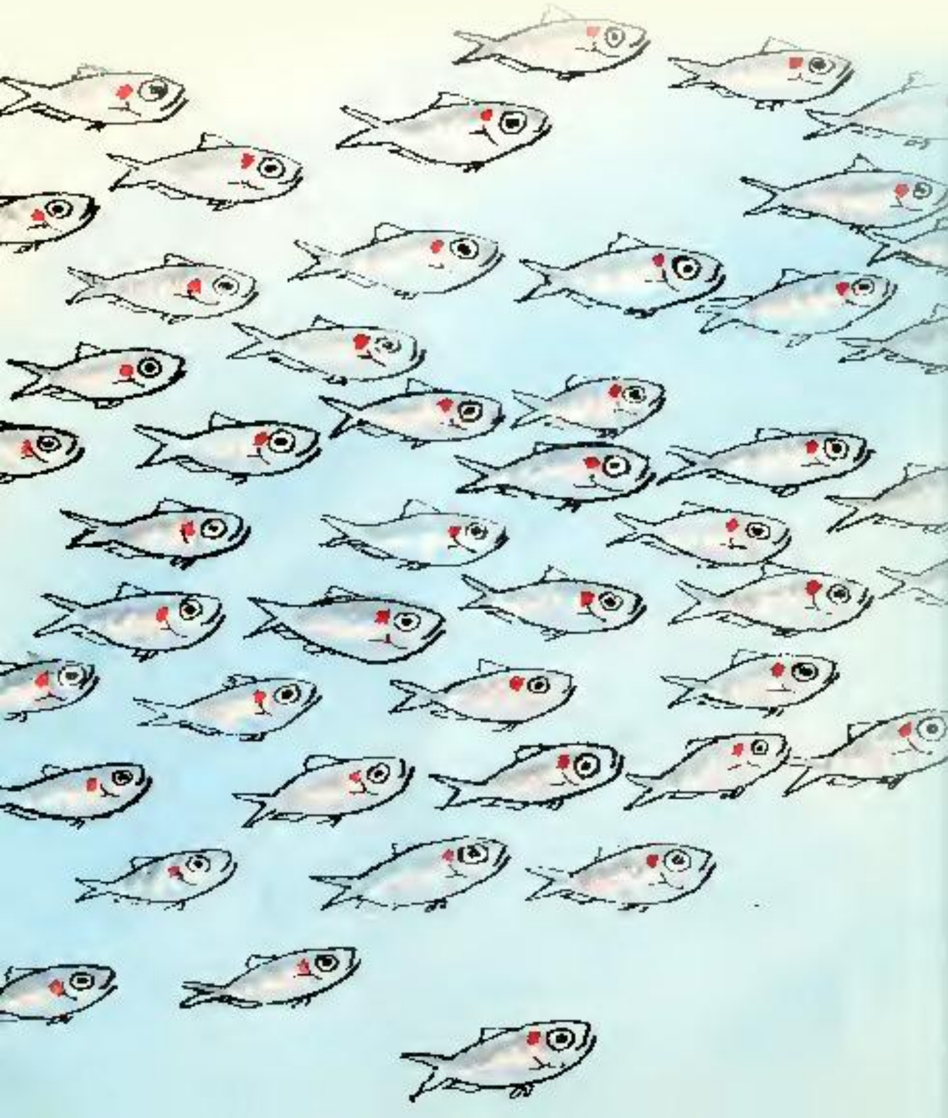
वह उसमें तैरकर गई.

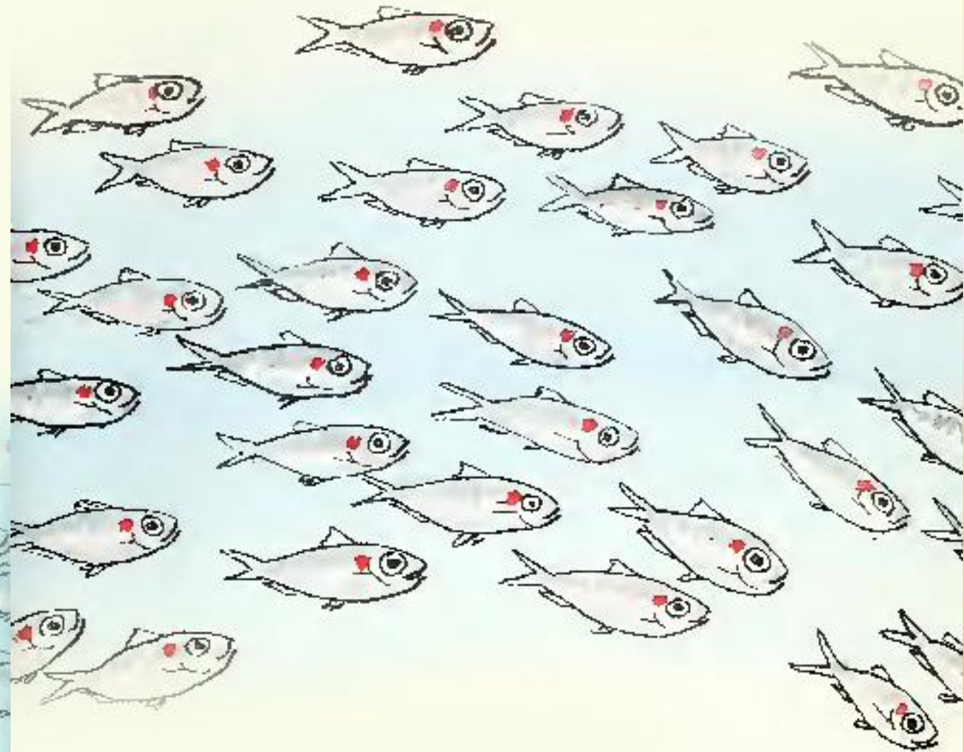


उसके दोनों ओर मछलियाँ थीं,

उसके ऊपर, उसके नीचे

और उसके पीछे भी मछलियाँ थीं.





कोई भी मछली किसी दूसरी मछली से

बहुत दूर नहीं गई,

कोई भी मछली किसी दूसरी मछली के

बहुत करीब नहीं आई,

उसे पता था कि वह सही जगह पर है,

फिर से झुंड में होना उसे अच्छा लगा.

मछलियों का झुंड

एक साथ मार्च करते हुए

सैनिकों जैसा लग रहा था,

वे सभी एक ही दिशा में तैर रहे थे.

वे सभी लगभग एक ही गति

से तैर रही थीं,

वे अपने नेता का अनुसरण करने का

खेल खेल रही थीं.

मछली के झुंड में कोई भी

मछली नेता हो सकती थी.



यदि समूह दाईं ओर मुड़ता,

तो दाईं ओर की मछलियाँ

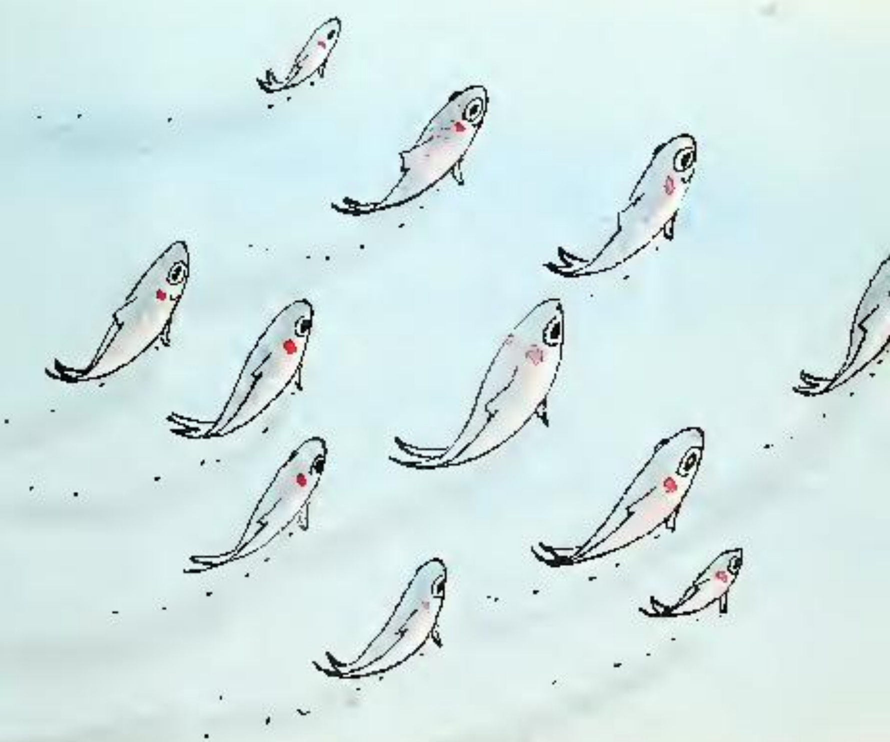
नेता बन जातीं.

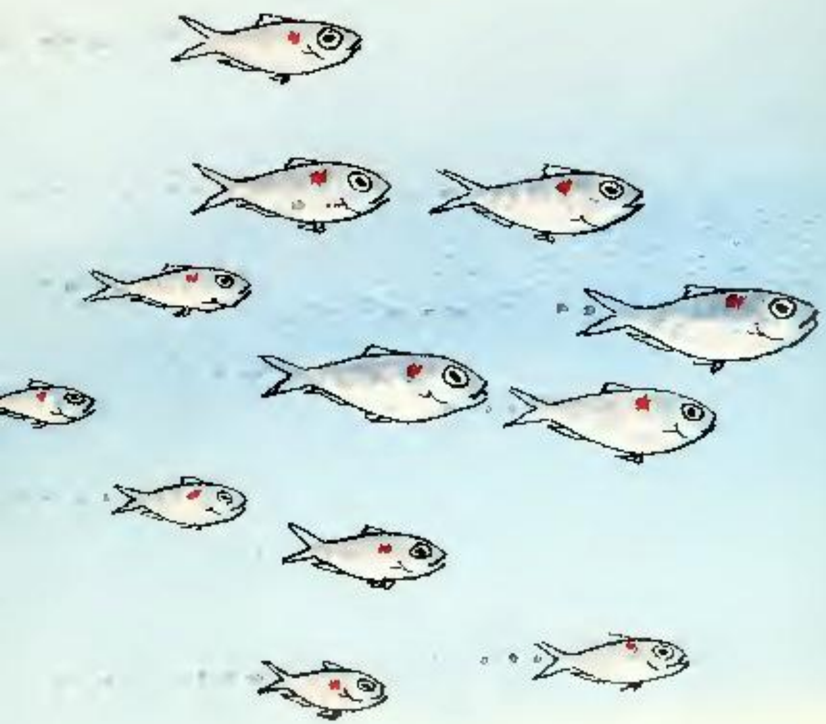


यदि समूह बाईं ओर मुड़ता,

तो बाईं ओर की मछलियाँ

नेता बन जातीं.



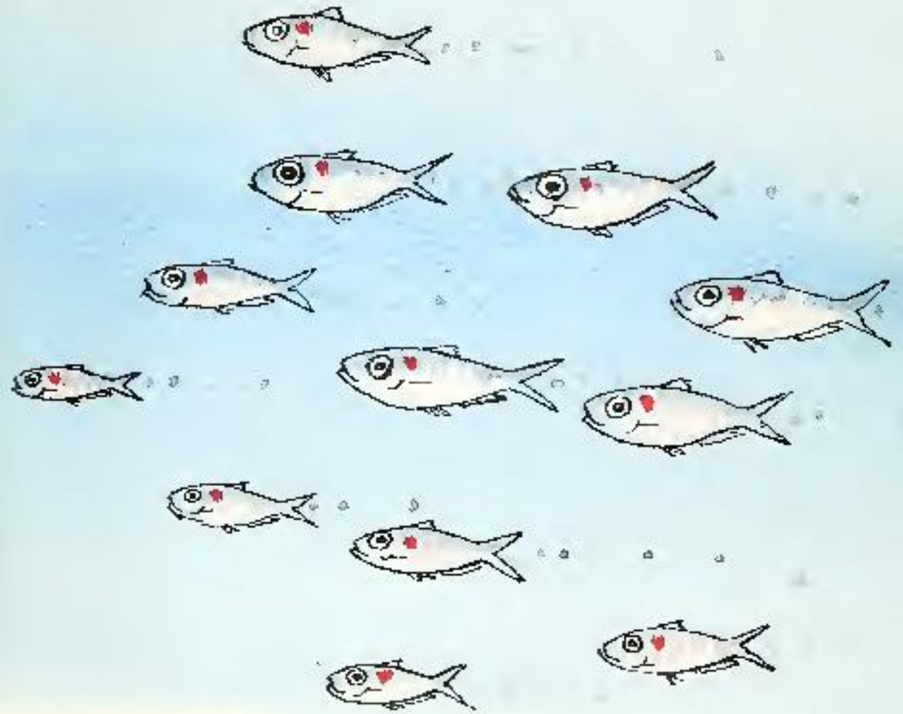


कभी-कभी समूह पलट कर घूम जाता,

और जिस रास्ते से आया था,

उसी रास्ते पर वापस तैरने लगता.

फिर पीछे की मछलियाँ नेता बन जातीं.

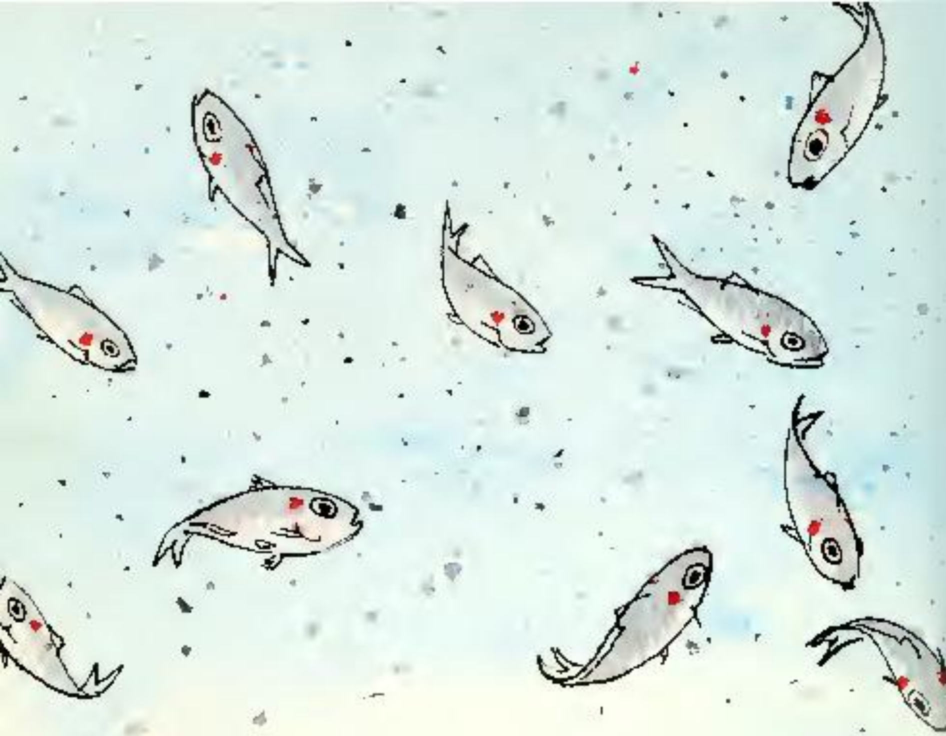


मछलियाँ भोजन की तलाश में

अलग-अलग रास्तों में मुड़ती.

जब समूह को कुछ प्लैंकटन मिलते,

तो वे तुरंत भोजन करना शुरू कर देतीं.

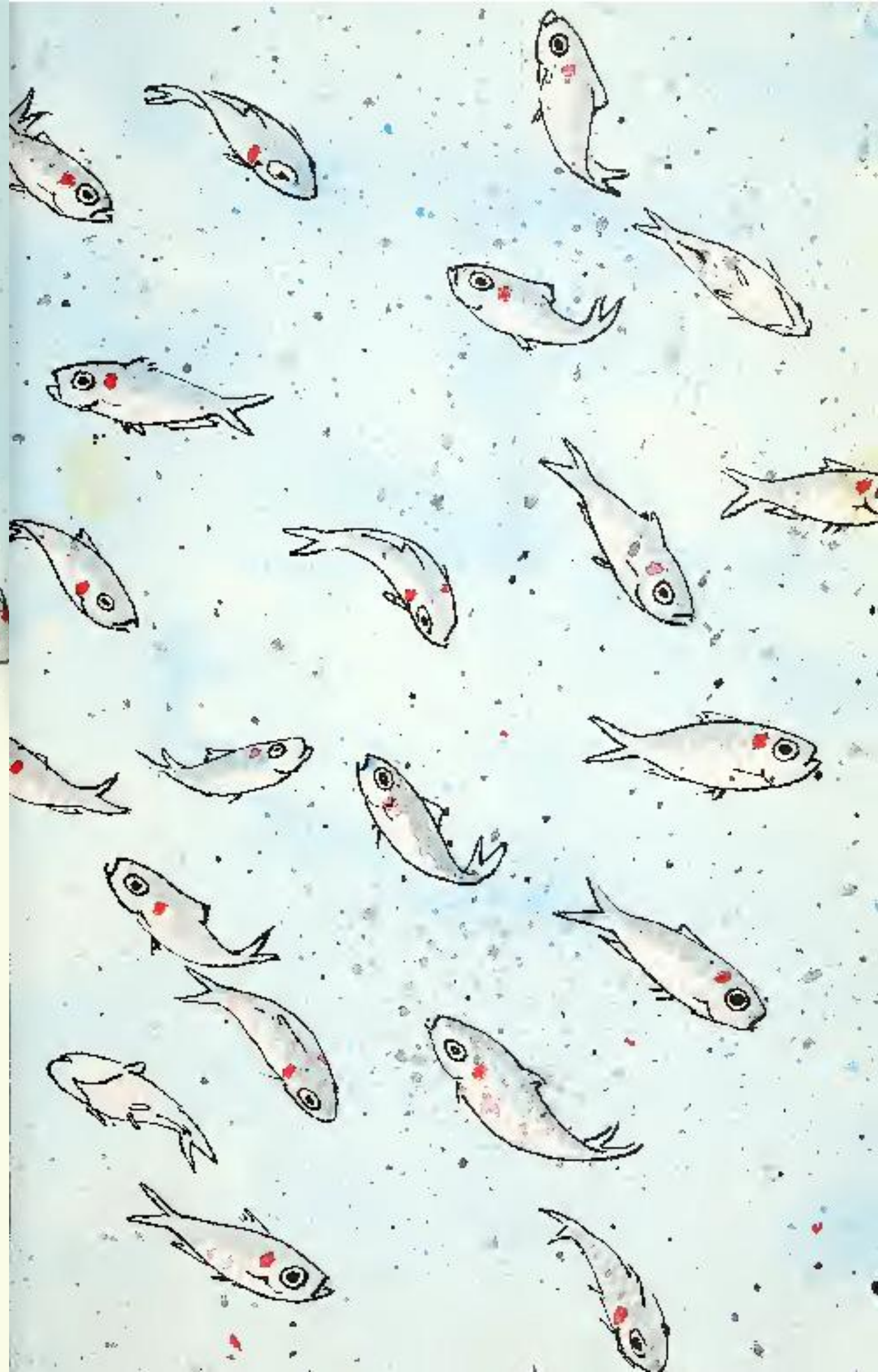


भोजन करते समय

मछलियाँ समूह में नहीं तैरती हैं,

लेकिन वे कभी एक-दूसरे से

बहुत दूर भी नहीं जाती हैं.





जब वे भोजन करना समाप्त कर लेती हैं,

तो वे एक-दूसरे के करीब आ जाती हैं,

वे फिर से एक स्कूल बन जाती हैं,

वे एक साथ एक दिशा में तैरती हैं,

यह वो स्कूल नहीं था

जो छोटी मछली को छोड़कर गया था.

वह यह नहीं जानती थी,

इससे कोई फर्क भी नहीं पड़ता था,

क्योंकि वे एक ही तरह की मछलियाँ थीं.



इससे स्कूल को भी

कोई फ़र्क नहीं पड़ा,

क्योंकि छोटी मछलियाँ

बिल्कुल एक तरह की ही दिखती थीं.

स्कूल ने दिन भर तैरते हुए

और आराम करते हुए बिताया,

शाम को

वे फिर से भोजन की तलाश

में निकल पड़ीं

फिर रात हो गई,

समुद्र में अंधेरा छा गया,





मछलियाँ शांत हो गईं,

वे अपनी आँखें खोलकर

फिर से सो गईं,

और छोटी मछली भी सो गईं.

अंत

